दिव्य
हस्तलिखित
संकेत

महज्जनोंके भावोद्गार

महाभावकी जो अगले स्तरकी चीज है, जिसकी रूपरेखा जीव गोस्वामी प्रभृति रसमर्मज्ञोंने भी नहीं खींची, वैसी चीज बाबामें व्यक्त हुई है। इनका काष्ठ मौन असलमें इनका रस-समुद्रमें निमज्जन है।

-श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार

राधाबाबा प्रेम, भक्ति और सत्यका प्रतीक। भक्ति मार्गकी जीवन्त मूर्ति। एक स्थिति है, जहाँ ब्रह्म सिवाय और कुछ भी नहीं। द्वैत, अद्वैत, ज्ञान, भक्ति सब एक ही हैं। वही है, जो स्थिति राधाबाबाकी है।

- श्रीआनन्दमयी माँ

श्रीराधाबाबा मणि हैं, प्रकाश हैं, शोभा हैं। श्रीराधाबाबा मेरी आत्मा हैं।

-श्रीश्रीयोगिराज ब्रह्मर्षि देवराहा बाबा

''जानेहु संत अनंत समाना'' यह मन्त्र सत्य ही प्रतीत होय हैं श्रीप्राणनाथकी लीला देख कै तथा सुन कै बड़े विज्ञ लोग हूँ आश्चर्यमें पर जाय हैं कारण कि बिचारी बुद्धिकी वहाँतक गम्य नहीं एवमेव संतनकी लीला हूँ श्रीभगवल्लीलाके समान ही विचार राख्य सौं परै कि बात बन जाय है बात स्पष्ट है सब ही शरीरतक ही सोच विचार सकैं हैं यहाँ देहाध्यास रहे ही नहीं यह सत् श्री जीवन धन लीलामें निमग्न रहे हैं। सुकृत पुञ्ज बाबा (श्री श्रीराधाबाबा)के विषयमें तौ कुछ कहते ही नहीं बने ''मन सतेत जेहि जान न बानी.....''

-पूज्य पंडित श्रीगयाप्रसादजी 'सचल गिरिराज' गोवर्द्धन

राधा बाबाको अगर कोई एक-एक लक्षण पर परखे तो उनको सौ टंच खरा पायेगा। मुझे अगर एक विशेषणसे ही राधा बाबाको परिभाषित करना हो तो मैं उनको कहूँगा—'विशुद्ध संत'। तुलसीदासने भी संतके लिये यह विशिष्ट विशेषण शायद एक ही बार प्रयुक्त किया है :—

संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही । राम कृपा करि चितवहिं जेही॥

रामने अगर कृपाकर मेरी ओर देखा तो उसका एक मात्र सबूत मेरे लिये यही है कि राधाबाबा मुझे मिले।

-कविवर डा० हरिवंश राय 'बच्चन'